शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य और संवैधानिक स्थिति

डॉ.समता जैन
सहायक प्राध्यापक
श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंस
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रस्तावना

हिंदी भाषा की लिपि, देवनागरी, भारतीय भाषाओं के लेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। देवनागरी लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख लिपियों में से एक है, जो संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली और कई अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयोग की जाती है। यह लिपि हिन्दू धर्म, संस्कृत साहित्य, और भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रही है। 'देव' का अर्थ है - भगवान और 'नागरी' का अर्थ है-नगर या नगरवासी, इसलिए इसे "देवों की लिपि" भी कहा जाता है। इसकी शुरुआत संस्कृत और प्राचीन भारतीय भाषाओं से हुई थी। हिंदी में देवनागरी लिपि का प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है और यह आज भी हिंदी साहित्य, संचार, और मीडिया का प्रमुख माध्यम है। इस शोध आलेख में देवनागरी लिपि के वैशिष्ट्य, महत्त्व और उसकी संवैधानिक स्थिति पर विस्तृत चर्चा करने के साथ ही यह भी जानेंगे कि डिज़िटल युग में देवनागरी लिपि का क्या स्थान है और इसके भविष्य के लिए क्या संभावनाएँ हैं।

देवनागरी लिपि का नामकरण एवं इतिहास

सामान्यतः लिपि आंगल भाषा के script का हिंदी अनुवाद है और उर्दू भाषा में इसे रस्मुलखत भी कहा जाता है। लिपि, किसी भी भाषा को अंकित करने का एक सशक्त माध्यम है, जो ध्वन्यात्मक चिह्नों की एक ऐसी सामूहिक व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत किसी भाषा विशेष को लिखित आधार प्रदान कर उसे पठनीय बनाती है। बिना लिपि के भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए भाषा के लिए लिपि एक महत्वपूर्ण घटक होकर उसे सजीव रूप प्रदान करती है। देवनागरी लिपि भारत में ऐतिहासिक रूप से गौरवशाली लिपि मानी जाती है। इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि की उत्तरी संस्कृत से हुआ। जब इसका प्रयोग होने लगा तब इसे देवनागरी कहा जाने लगा। दक्षिण में यह नदी नगरी के नाम से परिचित है। वर्तमान में यह लिपि हमारे समक्ष देवनागरी के नाम से प्रचलित है।

देवनागरी के प्राचीनतम लेख सबसे पहले राष्ट्रकूट वंश के राजा दन्तिदुर्ग के सामनगढ़ से 754 ई. के दानपत्रों से मिले। उसके बाद राष्ट्रकूट के राजा गोविन्द राज द्वितीय के धुलिया से 780 ई. के दानपत्रों से मिले। इसके बाद पैठण और बनिगाँव से मिले हुए राष्ट्रकूट के राजा गोविन्द तृतीय के 794 ई. व 808 ई. के दानपत्रों में और तदन्तर राष्ट्र कूट के राजा धु रराज अमोध्वर्ष और उसके शिलार्वंशी सामंत पुल्लशक्ति के क्रमशः 835 ई. 843 ई. तथा 851 ई. के दानपत्रों में उपलब्ध हैं। गुजरात महाराज और राजस्थान में अनेक ग्रंथ ताड़पत्र पर लिखे मिलते हैं, जो देवनागरी में हैं।

देवनागरी लिपि का आधार अति प्राचीन है। वह अपनी ऐतिहासिक यात्रा में संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश के अतिरिक्त कई समृद्ध आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे-मराठी, भोजपुरी, नेपाली, डोंगरी, हिंदी आदि जैसी भाषाओं की संवाही का बनाकर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही हैं। नागरी लिपि का अपना शुद्ध वैज्ञानिक आधार है। वह अपनी एकरूपता के वैशिष्ट्य से अपनी अलग छाप बनाए हुए है। संसार की कोई भी भाषा इस लिपि के द्वारा स्पष्टतापूर्वक लिखी जा सकती है जो इसकी ध्वनि संपन्नता को प्रकट करता है। वर्तमान में भारत देवनागरी लिपि भारत देश की राष्ट्रीय लिपि के रूप में गौरवान्वित है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता

देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है तथा जो लिखा जाता है वही बोला जाता है तथा समझा जाता है। इस लिपि में वैज्ञानिकता के साथ आदर्श लिपि के सभी गुण मौज़ूद हैं, जिसे हम अधोलिखित बिंदुओं के माध्यम से जान सकते हैं। देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजन की दृष्टि से वर्गीकरण किया गया है; पहले स्वर तथा बाद में व्यंजनों को स्थान दिया गया है। देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनियों के लिए अलग वर्ण है। इन वर्णों के अपने अक्षर तथा मात्रा चिह्न है। जिनका अपना-अपना अलग महत्त्व है। स्वर वर्ण तथा मात्राएँ व्यंजन वर्णों के साथ प्रयोग होने पर अपनी पहचान तथा अस्तित्व बनाए रखने के साथ-साथ उच्चारण के समय उच्चरित होते हैं।

देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजन ध्वनियों को कंठ, तालव्य, मूर्धन्य, दंत, औष्ठ्य, अंतस्थ, ऊष्म, अंत में संयुक्त वर्ण के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। वर्गीकरण में अघोष तथा सघोष क्रम के स्थान ध्यान रखने के साथ-साथ पहले अल्पप्राण फिर महापुराण तथा अंत में अनुनासिक ध्वनियों को स्थान दिया गया है। ऐसा ध्वन्यात्मक वर्गीकरण अन्य किसी लिपि में नही मिलता।

देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य

देवनागरी समृद्ध भाषिक परंपरा की प्रतिनिधि लिपि है। विश्व की सभी बड़ी भाषाओं की लिपियों की तुलना में उच्चरित ध्वनियों को वैज्ञानिक विश्वसनीयता के साथ लिखे जाने की दृष्टि से देवनागरी लिपि की विशेष प्रतिष्ठा है। देवनागरी लिपि अपनी विशेषताओं के कारण हिंदी को एक ऐसी अनूठी वर्णमाला दे सकी है, जहाँ वर्षों के क्रम, उनके वर्गीकरण आदि का मनुष्य के ध्वनि-तंत्र से विलक्षण सामंजस्य है। ऐसी व्यवस्था किसी अन्य लिपि में दुर्लभ है। देवनागरी लिपि में पर्याप्त ध्वनि चिह्न होने के कारण किसी भी उच्चरित ध्वनि को लिपिबद्ध करना सुकर तो है ही, साथ ही शब्दों की वर्तनी को सुनकर लिखा जा सकता है। निरंतर विकासमान भाषा, लिपि के लिए नई-नई चुनौतियाँ लेकर आती रहती है और तदनुसार लिपि में नये चिह्न ग्रहण किए जाते हैं, हटाए जाते हैं या कभी-कभी उनकी आकृतियों में सुविधानुसार परिवर्तन किए जाते हैं। विश्व की सभी बड़ी भाषाओं की लिपियों की तुलना में उच्चरित ध्वनियों को वैज्ञानिक विश्वसनीयता के साथ लिखे जाने की दृष्टि से देवनागरी लिपि की विशेष प्रतिष्ठा है। डॉ. चटर्जी के शब्दों में देवनागरी का भारत की अन्य प्रान्तीय लिपियों से सहोदर बहनों या चचेरी बहनों का-सा सम्बन्ध है। बंगला-असमी, मैथिली, उड़िया, गुरुमुखी तथा देवनागरी एक-दूसरे से इतने निकट रूप से संबंध

हैं एवं एक-दूसरे से इतनी अधिक मिलती-जुलती हैं कि हम उन्हें एक ही लिपि की विभिन्न शैलियाँ तक कह सकते हैं। समूचे भारत में सभी लिपियाँ देवनागरी लिपि की स्वगोत्र या कौटुम्बिक लिपियाँ ही सिद्ध होती है। प्रसिद्ध डॉ. एस. एम. कजे ने देवनागरी लिपि के वैज्ञानिक गठन तथा उसकी ऐतिहासिक महत्ता पर बल देते हुए उसे अपवाद के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उनके विचार से अन्य लिपियों के साथ देवनागरी की तुलना अनावश्यक है। उत्तरी और दक्षिणी भाषाओं की महान् लिपियों के बीच में ही नहीं, भारतीय आर्य तथा द्रविड़ वर्गों की लिपियों के बीच में भी देवनागरी ने एक कड़ी का काम किया है आचार्य विनोबा भावे भारत की सभी भाषाओं को देवनागरी लिपि में लिखने के पक्ष में हैं। पिटमैन के शब्दों में संसार में यदि कोई पूर्ण वर्णमाला है तो वह हिंदी की है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिक तथा अन्य अनेक गुणों को देखते हुए यह बात स्पष्ट होती है कि यह एक आदर्श और वैज्ञानिक लिपि है। इस संदर्भ में जॉन गिल क्रिस्ट ने सही कहा है कि - ''मानव मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमालाओं में नागरिक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण वर्णमाला है।''

देवनागरी लिपि की संवैधानिक स्थिति

भारत एक बहुभाषी और बहुलिपिक राष्ट्र है जहाँ अनेक भाषाओं और लिपियों का प्रयोग होता है। इन सब में देवनागरी लिपि का एक विशेष और केंद्रीय स्थान है। यह न केवल हिंदी की लिपि है, बल्कि कई अन्य भाषाएँ भी इससे जुड़ी हुई हैं। भारत में देवनागरी लिपि को विशेष संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। यह लिपि मुख्यतः हिंदी भाषा को लिखने के लिए उपयोग की जाती है, जो भारत की राजभाषा है। भारत विविध भाषाओं और लिपियों का देश है, लेकिन देवनागरी लिपि को एक विशेष स्थान प्राप्त है। यह लिपि न केवल हिंदी भाषा की पहचान है, बल्कि इसे भारतीय संविधान द्वारा भी मान्यता दी गई है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी होगी और वह देवनागरी लिपि में लिखी जाएगी। इसका अर्थ यह है कि केंद्र सरकार के सभी आधिकारिक कार्य इसी लिपि में किए जाने चाहिए। इसके साथ ही, इसी अनुच्छेद में यह भी प्रावधान है कि सरकारी कार्यों में प्रयुक्त संख्याएँ अंतर्राष्ट्रीय अंकों (1, 2, 3...) में लिखी जाएंगी। देवनागरी लिपि भारत की सांस्कृतिक, भाषाई और शैक्षिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी सरलता, वैज्ञानिकता और व्यापक उपयोग के कारण यह भारत की सबसे प्रमुख लिपियों में मानी जाती है। संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी भाषा को जो स्थान मिला है, वह देवनागरी लिपि की स्थिति को और सशक्त करता है। यह लिपि भारतीय संस्कृति, साहित्य और शिक्षा की रीढ़ मानी जाती है। देवनागरी लिपि का प्रयोग केवल हिंदी तक सीमित नहीं है, बल्कि संस्कृत, मराठी, कोंकणी जैसी अनेक भारतीय भाषाएँ भी इसी लिपि का उपयोग करती हैं। देवनागरी लिपि केवल एक लेखन पद्धति नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का प्रतीक है। भारतीय संविधान ने इसे राजभाषा हिंदी की लिपि बनाकर एक गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया है। देवनागरी का प्रयोग जितना प्रशासनिक क्षेत्र में है, उतना ही साहित्य, शिक्षा और मीडिया में भी व्यापक रूप से देखने को मिलता है। आज के डिजिटल युग में भी देवनागरी लिपि का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है, जिससे इसकी संवैधानिक स्थिति और भी सुदृढ़ होती जा रही है। हिंदी भाषा को संविधान की

आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि देवनागरी लिपि को भी परोक्ष रूप से संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। इस प्रकार, देवनागरी लिपि केवल लेखन का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की एक सांस्कृतिक धरोहर है जिसे संविधान द्वारा संरक्षित किया गया है।

हिंदी में देवनागरी लिपि का विकास

हिंदी भाषा में देवनागरी लिपि का प्रयोग शुरू में वैदिक और शास्त्र संबंधी कार्यों के लिए हुआ था, लेकिन धीरे-धीरे यह प्रचलित हो गई और हिंदी साहित्य का अभिन्न हिस्सा बन गई। 19वीं शताब्दी में, जब हिंदी को एक प्रमुख भाषा के रूप में पहचाना जाने लगा, देवनागरी लिपि का प्रयोग बढ़ गया। हिंदी भाषा की साहित्यिक धारा में देवनागरी का योगदान अमूल्य रहा है, और इसके माध्यम से कई महान रचनाएँ जैसे कि 'रामचरितमानस', 'प्रेमचंद की कहानियाँ', 'गोदान' आदि का लेखन हुआ।

देवनागरी लिपि का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व

देवनागरी लिपि ने हिंदी भाषा के विकास के साथ भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। देवनागरी लिपि की जड़ें भारतीय संस्कृति और साहित्य से जुड़ी हैं। हिंदी के माध्यम से भारतीय साहित्य, संस्कृति और दर्शन को एक सशक्त मंच मिला। देवनागरी का प्रयोग न केवल हिंदी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ है, जिससे भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ। यह लिपि संस्कृत और अन्य प्राचीन भाषाओं के लिए एक आदर्श लिपि रही है। इसके माध्यम से ही भारतीय संस्कृति, वेद, उपनिषद् और प्राचीन ग्रंथों का संरक्षण हुआ है। आज भी यह लिपि भारतीय राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक है, जो भारतीय समाज के विविधता में एकता का संदेश देती है।

देवनागरी लिपि के लिए वर्तमान चुनौतियाँ

हालाँकि देवनागरी लिपि का प्रयोग बढ़ा है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ सामने आयी हैं। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि नई पीढ़ी को देवनागरी लिपि सिखाने में कठिनाई हो रही है, विशेषकर ग्रामीण इलाकों में। इसके अलावा, कुछ लोग देवनागरी की बजाय अंग्रेजी और रोमन लिपि का प्रयोग ज्यादा करते हैं, जिससे देवनागरी के उपयोग में कमी आ रही है। इसके साथ ही, तकनीकी मंचों पर देवनागरी लिपि का सही प्रयोग और उच्चारण भी एक समस्या है, क्योंकि कुछ टेक्स्ट सॉफ्टवेयर और की-बोर्ड में सुधार की आवश्यकता है।

कंप्यूटर के लिए एक व्यवहार्य भाषा के रूप में हिंदी को लाने की दिशा में यह आवश्यक शर्त है कि इसकी लिपि एक स्पष्ट व्यवस्था पर आधारित हो। यूनिकोड में उपलब्ध देवनागरी अभी भी कई उलझनों से भरी है। इसमें अलग-अलग फॉण्ट अपनी-अपनी शैली में अक्षरों और संयुक्ताक्षरों को डिज़ाइन कर रहे हैं। ऐसे में कई बार अलग-अलग कंप्यूटर एक ही टेक्स्ट या पाठ को अलग-अलग प्रकार से दर्शाते हैं। यूनिकोड में हिंदी को आवंटित कोड का विस्तार U+0900 से लेकर U+097F तक है। इसमें कुल मिलाकर 128 कोड पॉइंट हैं और अद्यतन जानकारी के अनुसार देवनागरी के लिए अब कोई भी अतिरिक्त कोड पॉइंट आरक्षित नहीं है। अतः देवनागरी में लिखी जाने वाली सभी भाषाओं के सभी लिपि चिह्नों को इन्हीं कोड के अंदर व्यवस्थित किया जाना है। लिपि और उसके साथ वर्तनी का मानकीकरण इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है ताकि

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी एक विश्वसनीय तकनीकी भाषा-विकल्प बन सके।

देवनागरी लिपि का भविष्य और सुझाव

लेखन की दृष्टि से देवनागरी श्रेष्ठ लिपि है क्योंकि इस लिपि के एकरुपता पाई जाती है। देवनागरी लिपि संदेह रहित है, क्योंकि इस लिपि में एक संकेत से दूसरे संकेत तक भ्रम नहीं होता। अतः उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि देवनागरी लिपि अपनी कलात्मक सुंदरता एकरूपता तथा सुडौल के बल पर पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध है तथा वर्तमान में मुद्रण और टंकण में इसका प्रयोग तेज गति से बढ़ रहा है। यद्यपि आज भी टंकण आदि के सुधार में अनेक संभावनाएँ विद्यमान हैं।

आज के वैश्विक परिदृश्य में हमें देवनागरी लिपि को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सकारात्मक रूप से अपनाते हुए जन-जन की भाषा- हिंदी भाषा को ध्येय वाक्य के रूप में स्थापित करते हुए हिंदी भाषा को विदेशी भाषाओं की मानसिक गुलामी की काटकर अपनी मातृभाषा और राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मान दिलाने हेतु सक्रिय भागीदारी देनी होगी तभी हम परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सूत्र वाक्य 'इंडिया नहीं भारत बोलो' को शब्दश: सार्थक करने में सफल होंगे और भारत माता के सच्चे सपूत के रूप गौरव पाएंगे।

आने वाले समय में देवनागरी लिपि का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। यदि हम शैक्षिक और डिज़िटल क्षेत्र में सुधार करते हैं, तो देवनागरी का प्रयोग और भी बढ़ेगा। खासतौर पर मोबाइल और इंटरनेट के क्षेत्र में देवनागरी लिपि के बढ़ते उपयोग से यह लिपि और अधिक प्रचलित होगी। इसके अलावा, देवनागरी लिपि को स्कूलों और विश्वविद्यालयों में प्रमुख रूप से पढ़ाया जाएगा, जिससे नई पीढ़ी के बीच इस लिपि की पहचान और महत्त्व बढ़ेगा।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा में देवनागरी लिपि का योगदान अतुलनीय है। देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं का अभिन्न हिस्सा होने के साथ-साथ संवैधानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अतिमहत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। 19वीं-20वीं शताब्दी में मानकीकरण के वैयक्तिक और संस्थागत प्रयास की मदद से अखिल भारतीय लिपि के रूप में विकसित होने लगी। आज भी देवनागरी लिपि ही एकमात्र ऐसी लिपि है, जो भारत की सभी भाषाओं की विशेषताओं को धारण करके राष्ट्रीय एकीकरण का सशक्त माध्यम बन सकती है। संविधान के तहत भी इसे हिंदी भाषा के लिए आधिकारिक लिपि के रूप में अपनाया गया है और इसका उपयोग भारतीय समाज में संपर्क, शिक्षा, प्रशासन और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसलिए यह लिपि केवल एक लेखन प्रणाली नहीं बल्कि भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्र की एकता का प्रतीक भी है। यह न केवल भारतीय साहित्य और संस्कृति का हिस्सा है, बल्कि यह भारतीय भाषाओं की संरचना और पहचान को भी मज़बूत करती है। डिज़िटल युग में देवनागरी का स्थान और भी महत्त्वपूर्ण हो गया है और इसके भविष्य में विकास की अपार संभावनाएँ हैं। एतदर्थ इस विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि देवनागरी लिपि का अपना अलग वैशिष्ट्य है। यह भारतीय भाषायी विविधता में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है।

संदर्भ सूची

1. देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण भारत सरकार, केंद्रीय हिंदी निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग, प्रधान संपा. प्रोफेसर सुनील बाबूराव कुलकर्णी 2024

2 देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि, डॉ. रजनी शिखर, पावर ऑफ नालेज, वाल्यूम 1, इशु **Xvii** *जनवरी-मार्च, 2017*

3. डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या भारतीय आर्य भाषा और हिंदी 1957

4. भाषा पत्रिका, वर्ष 6, अंक 4, पृष्ठ 6